हर एक के लिए

धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता

(FoRB)

stefanus alliance international

together for the persecuted

ALL INDIA CHRISTIAN COUNCIL

aicc

TO PROTECT AND SERVE

धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता :
क्यों, क्या और कैसे

''हर एक को विचारों, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार है; इस अधिकार में शामिल है - धर्म परिवर्तन की स्वतंत्रता या विश्वास, और स्वतंत्रता या अकेले या समुदाय में दूसरों के साथ और सार्वजनिक या व्यक्तिगत, अपने धर्म या विश्वास को व्यक्त करने /आस्था की शिक्षा, व्यवहार, उपासना/आराधना और पालन करना''।

अनुच्छेद १८, मानव अधिकारों की विश्वव्यापक घोषणा

Produced by **All India Christian Council** and **Stefanus Alliance International**
Contributors and "Financial Support": Digni
First Indian Hindi edition 2013

Printed and bound in India by Authentic Media, Secunderabad - 500 067
Email: printing@ombooks.org

रचनाकार :
स्टेफनुस अलायेन्स इन्टरनेशनल, 2012

सहयोगी :
ऐड ब्राउन, क्रिस्टीन स्टोरकर एवं लीसा विनथर
नमूना/ढांचा : टाइड
आर्थिक सहायता : डिगनी

कॉपीराइट : स्टेफनुस एलाएन्स इन्टरनेशनल 2012
सभी अधिकार आरक्षित। इस प्रकाशन की विषय सूचि उपयोग की जा सकती है और या पुन: उत्पादन शिक्षा हेत् और दूसरे गैर-व्यापारिक अभिप्रायों, किसी में ऐसे पुन: उत्पादन के साथ स्टेफनुस अलायन्स इन्टरनेशनल की स्वीकृति साधन के स्वरूप जुड़ी हो/दी गई हो।

विषय सूचि

1	परिचय	4
1.1	हर एक की सूचि में धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता	4
1.2	सामान्य गलतफहमियां	5
2	धर्म या विश्वास/आस्था की स्वतंत्रता क्यों महत्वपूर्ण है?	6
3	धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता क्या है?	9
3.1	मूल दस्तावेज	10
3.2	आठ मानक बुनियादी मूल्य	10
4	धर्म की स्वतंत्रता कैसी है या विश्वास के साथ दुर्व्यवहार?	14
4.1	सताव के तीन पहलू	14
4.2	धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता पर गलत सीमाएं	15
4.3	सरकार के प्रतिबन्ध	16
4.4	सामाजिक शत्रुता	16

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें

इस पुस्तक के अधिक मित्रतापूर्ण होने के लिये हमने इसमें तीन मुख्य विशेषताएं शामिल की हैं। प्रथम विशेषता आप आसानी से पायेंगे, पुस्तिका के अन्त में आप फोल्डर फाड़कर प्राप्त कर सकते हैं। ये छोटा रास्ता ये मूल पाठ के संक्षिप्त अनुवाद उपलब्ध कराता है साथ ही भाषा समझने में आसान है।

ये छोटा रास्ता अकेले इस्तेमाल किया जा सकता है या पुस्तिका के पढ़ने के संयोजन के साथ।

दूसरी विशेषता कठिन शब्दों की शब्दावली या विचारधारा है। ये शब्दावली पुस्तिका के अन्त में व्यवहारिक फोल्ड आऊट पृष्ठ पर है। सबसे उत्तम उपयोग के लिये हम सिफारिश करते हैं कि आप इश्तहार/विज्ञप्ति को खोलें।

आसानी से शब्दावली तक पहुंचने के लिये जब पढ़ते हैं, जो शब्द शब्दावली में प्रगट या दिखता है उन्हें (*) प्रकार के चिन्ह लगाये गये हैं। हर शब्द की परिभाषा हमारी अपनी है और कार्यशील अर्थ में है। इस पुस्तिका की आवश्यकताओं के लिये उपयुक्त होने के लिये।

अन्तत: हम आशा करते हैं कि ये पुस्तिका कार्य-पुस्तिका के रूप में इस्तेमाल की जायेगी। कृपया किसी भी विचार, टीका और प्रश्नों के लिये आप लिखने/व्यक्त करने हेत् स्वतंत्र महसूस करें, हमने पाठ के अन्त में काफी जगह उपलब्ध कराई है।

1. परिचय

1-1 हर एक की रूचि में धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता

संसार की जनसंख्या का अत्याधिक बहुमत एक धार्मिक विश्वास को मानता है। दुर्भाग्यवश, लोगों की स्वतंत्रतापूर्वक चुनने और अपने विश्वास को व्यक्त करने की सम्भावना को बढ़ते हुए प्रतिबंधित किया गया है।

१. धार्मिक अल्पमतों पर हिंसात्मक हमले एवं विश्वास करने वाले समुदायों पर सरकार का क्रूर नियंत्रण, हम जो अक्सर सोचते उसकी अपेक्षा ये अधिक सामान्य स्थानों में है। धार्मिक सताव विभिन्न रूप में आते हैं, और ऐसी गतिविधियां शामिल करते हैं जैसे सुव्यवस्थित और छोर भेदभाव, कारावास, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक हिंसा और हत्या। २०११ दिसम्बर में, तज़ाकिस्तान के दुशानबे के पास मस्जिद पर शुक्रवार की नमाज़ के दौरान राजकीय अधिकारियों द्वारा छापा मारा गया, दो अराधकों पर जुर्माना लगाया गया जबकि दूसरे नौ सदस्यों को रोका गया दस दिन के लिये बिना अदालत की सुनवाई के।

२. २०११ के गुडफ्राइडे पर कर्नाटक (भारत) में २ प्रोटेस्टेंट चर्चेज़ पर हिन्दू कट्टरवादों द्वारा हमला किया गया। हिन्दू उग्रवादियों ने अराधकों को डंडों से धमकाया और ये मांग की कि वे वापस हिन्दुत्व में आ जायें।

३. २०१० के मई के महीने में ९० अहमदियों को मार डाला गया था और ७० से ऊपर घायल आत्मघाती हमलों में हो गये जो लाहौर, पाकिस्तान के दो अहमदी मस्जिदों पर किये गये थे। अहमदी अपने आपको मुस्लिम मानते हैं, पर पाकिस्तानी सरकार द्वारा वे विधर्मी समझे जाते हैं साथ ही शिया और सुन्नी समुदायों द्वारा भी।

४. ये कुछ उदाहरण हैं ये बताते हुए कि सभी लोग इन धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता का मौलिक मानव अधिकारों का आनन्द नहीं ले पाते (एफओआरबी') ये प्रतिष्ठित/सुरक्षित होने के बावजूद विभिन्न मानव अधिकारों के दस्तावेज और विस्तृत रूप से करीब करीब संसार के सभी सरकारों द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है।[A]

इस पुस्तिका के साथ स्टेफनुस एलायसन्स इन्टरनेशनल ये वर्णन करेगा कि क्यों, क्या और कैसे धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता है: ये क्यों महत्वपूर्ण है, इसके केन्द्रिय मूल तत्व क्या हैं, और इसका दुरुउपयोग कैसे किया जाता हैं। इस पुस्तिका का लक्ष्य ये है कि कोई भी जो ''FoRB'' के विषय अधिक सीखने की रूचि रखता है उसे कुछ हथियार (साधन) दे दें। हम आशा करते हैं कि इसे इस मौलिक स्वतंत्रता को बढ़ाने और बचाने में संसार के चारों ओर इस्तेमाल किया जायेगा। हमारा ये विश्वास है कि ''FoRB'' की बढ़ौतरी, बचाव और सम्मान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक अंग बहु-धार्मिक समाजों के विकास में है, जो सहनशीलता और शान्तिपूर्ण सह-असमित्व के द्वारा है।

A मार्च 2012 तक, 193 सदस्यों में से 167 यू.एन के सदस्यों ने इन्टरनेशनल कोवनेनशन सिविल और राजनैतिक अधिकारों को अनुसमर्थन कर दिया। (आईसी.सी.पी.आर') एक बांधने वाली संधि, जो अनुच्छेद 18 में वर्णित है कि हर एक को विचारों, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता है।

1-2 सामान्य गलतफहमियां

मानव अधिकार और मौलिक स्वतंत्रताओं का एक प्रथम होने के बावजूद, ''FoRB'' चुनौती देता है और अंतर्राष्ट्रीय कार्य क्षेत्र पर चुनौती दी है। बहुत सी आम-गलतफहमियां हैं कि ''FoRB'' के विषय कि क्या है या नहीं है और इसलिये ये देखना उपयुक्त है कि इन कुछ गलतफहमियों को देखें, इससे पहले कि इस पुस्तक के मर्म (पूर्णता) को देखें; नाम से कि क्यों, क्या और कैसे ''FoRB'' इसके विपरीत है जो बहुत से सोचते कि "FoRB" नहीं है:

- स्वयं धर्मों का बचाव, ना उनके विचार और धार्मिक सिद्धान्त आलोचना और उपहास से। जैसे दूसरे मानव अधिकारों के साथ ''FoRB'' विचारों या धार्मिक सिद्धान्तों का या आलोचना का बचाव नहीं करता पर व्यक्त जो दृष्टिकोण रखता है, तथापि/फिर भी एक धर्म का उपयोग धार्मिक घृणा प्रचारित करने के लिये नहीं कर सकता जो हिंसा को भड़काता या भेदभाव के कार्य की ओर ले जाना है।
- अन्तर-धार्मिक सामंजस्य और एकरूपता' के विषय लागू करना

  बल्कि ''FoRB'' धार्मिक बहुलवाद विषमता को सम्भव बनाती और विभिन्न धार्मिक झुण्ड़ों की आपसी सम्मान में सह अस्तित्व में रहने योग्य बनाता है। हाल का ''ब'' यू.एन. की धार्मिक स्वतंत्रता पर विशेष रिपोर्ट या विश्वास पर, ''हीने बीले फैल्डट'' ''FoRB'' को बिना-सामंजस्य* शान्ति प्रोजेक्ट कहता है, इसके शान्त करने के प्रयास के संकेत करता है जबकि धार्मिक बाहुलवाद को बचा रहा है।[8]
- एक अनन्य पश्चिमी/मसीही विचारधारा

  ''FoRB'' और ''FoRB'' की सीमाएं हर महाद्वीप में पाई जाती हैं और सभी धार्मिक ग्रुप विभिन्न तरीकों में एक या दूसरे इन सीमाओं में लक्षित किये जाते हैं। बहुत से बड़े धर्मों के अगुवों ने धार्मिक धीरजता और ''FoRB'' के तत्वों/अंगों के लिये आवाज़ उठाई है, बहुत पहले इसे आधुनिक मानव अधिकारों के दस्तावेजों में प्रतिष्ठाषित किया है।
- आम लोगों (जनता) से धर्म का निकाला जाना और संसारिक समाजों में व्यक्तिगत रूप से डालना। FoRB ''धर्मनिरपेक्षता''* की कल्पना करती है। जबकि राज्य में निष्पक्ष रूप से कार्य करता है सभी संसार के दृष्टिकोण और जीवन स्थिर होती है, दोनों ध ार्मिक और गैर धार्मिक। ये धर्म निरपेक्षतावाद को लागू करने को सही नहीं ठहराता-संसार धर्म विरोधी दृष्टिकोण और सार्वजनिक स्थानों को धर्म से स्वतंत्र उत्पन्न करने के लिये सभी सार्वजनिक क्षेत्रों से धर्म को दमन करते हैं।

घटना

इन्डोनेशिया में नास्तिकों* का सताव

ऐलेक्स एन, एक ३० वर्षीय इन्डोनेशियन नास्तिक, को ढाई वर्ष की सज़ा दी गई साथ ही ११,००० यू.एस. डॉलर के बराबर का जुर्माना भी किया गया इसलिये कि उसने लिखा, ''परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है'' और फेस बुक पर नास्तिक पेज आरम्भ किया। इन्डोनेशिया मुस्लिम बाहुल देश है, पर वहां धर्म की स्वतंत्रता का कानून है। फिर भी ये कानून विशेष धार्मिक विश्वास पर लागू होते हैं : इस्लाम, केथोलिकवाद, प्रोटेस्टेन्टवाद, बुद्धिजम्, कन्फ्यूसियनवाद, और हिन्दुत्ववाद। नास्तिकवाद को धार्मिक नियमों द्वारा बचाव नहीं किया गया। ऐन पर आरोप था कि उसने सूचना को फैलाया जिसका उद्देश्य धार्मिक घृणा या शत्रुता है, इन्टरनेट पर बदनाम करने वाले निन्दनीय सन्देश, फैलाया; और दूसरों को नास्तिकता अपनाने को बुलाया। ऐन ने कई धमकियां भी प्राप्त कीं और कुछ लोगों ने तो उसका सर-कलम करने की बात कहीं और दूसरे नास्तिकों का भी। ऐन की क्रोधित भीड़ ने पिटाई भी की साथ ही उसके समुदाय ने उसे तिरस्कार किया। ये उसके फेसबुक पर सार्वजनिक रूप से क्षमा याचना करने के और इस्लाम में परिवर्तित होने के बावजूद हुआ।

साधन: द गार्जियन, ३ मई २०१२; बेने डिक्ट रोजर/क्रिश्चियन सोलडरिटी वर्ल्डवाइड, २०१२

2-FoRB क्यों महत्वपूर्ण है?

जब प्रेसीडेन्ट फ्रेन्क्लिन रूजवेल्ट, जो यू.एन. की स्थापना के पीछे एक अगुवाई करने वाली ताकत थी, संसार को एक दर्शन देशों के बीच शान्तिमय अस्तित्व बनाये रखने के लिये दिया, उसने चार मौलिक स्वतंत्रताओं के विषय वर्णन किया : बोलने की स्वतंत्रता, विश्वास की स्वतंत्रता, चाहत की स्वतंत्रता और भय से स्वतंत्रता, ७. विचारों की स्वतंत्रता, विवेक और विश्वास, अक्सर इसका संदर्भ धर्म की स्वतंत्रता (FoRB) बहुतों के द्वारा ये पहली स्वतंत्रता मानी जाती है, सबसे अधिक महत्वपूर्ण और मौलिक मानव अधिकार और बुनियादों में से एक बुनियाद लोकतंत्र समाज। ८. धार्मिक व्यवहार की गलत सीमाएं और धार्मिक आधार पर सताव या विश्वास सभी धार्मिक झुण्ड़ों को प्रभावित करता है, जिसमें नास्तिक भी शामिल है* और अक्षेयवादी* और ये संसार के सभी भागों में होता है। ९. संसार के ४० प्रतिशत देश धर्म पर उच्च या अधिक उच्च प्रतिबन्ध लगाते हैं। इसलिये कि कुछ प्रतिबंधित देश बहुत घनी आबादी वाले हैं, संसार के तीन चौथाई ७ अरब लोग उन देशों में रहते हैं जहां बहुत अधिक धार्मिक प्रतिबन्ध हैं। १०. जिसका धक्का/जोर अक्सर धार्मिक अल्प संख्यकों पर गिरता है जो अक्सर देखे गये - आर्थिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक धमकियां बहुसंख्यकों को होती है।

धार्मिक स्वतंत्रता स्वयं में महत्वपूर्ण है क्योंकि ये व्यक्ति विशेष को अपनी पहचान का अधिकार देती है, कि व्यक्तिगत विश्वास बनायें और उन्हें प्रगट करें। FoRB का उल्लंघन अत्याधिक आपस में बुना हुआ है और दूसरे गृह राजनीतिक अधिकारों को जोखिम में डालते हैं, जैसे जीने का अधिकार, एकान्तता, एक साथ जमा होना, और प्रदर्शित करना साथ ही सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकार। भेदभाव* धर्म पर आधारित अल्पसंख्यकों को प्रभावित करती है, सामाजिक और आर्थिक सामान तक पहुंच, और उन शिकायतों का योगदान देते जो समाज को नष्ट करते हैं। महिलायें, बच्चे, पलायन किये हुए कार्यकर्ता, और शरणार्थियों विशेषरूप से कमज़ोर हैं। FoRB भी परिस्थिति उत्पन्न करता है शान्तिमय अस्तित्व की धार्मिक झुण्ड़ों, लोकतंत्रीकरण, विकास और दूसरे मानव अधिकार-कुछ जिससे हर कोई लाभ उठाता है। इस प्रकार धार्मिक स्वतंत्रता के लिये कार्य करना सामान्य रूप से मानव अधिकारों को बढ़ावा देता है। ११. बहुत से कारण हैं कि क्यों FoRB महत्वपूर्ण है वे नीचे दिये में संक्षिप्त सारांश में किये गये है:-

- सामाजिक आर्थिक* तन्दुरुस्त होना : FoRB और आर्थिक स्वतंत्रता के स्तर और देश में विकास के बीच मज़बूत सम्बन्ध है। FoRB पर उच्च प्रतिबन्ध मज़बूती के साथ सम्बंधित हैं:-

  अर्थव्यवस्था - FoRB पर ऊंचे प्रतिबन्ध बयान किये जाते हैं, घरेलू उत्पादन का निम्न योग होना और यू.एन. के मानव विकास की सूचि में निचले अंक होना।

  महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति : महिलायें जो प्रान्त में FoRB पर उच्च प्रतिबन्ध के साथ रहती है, तो देश की संसद में कम सहभागिता होती है साथ ही पेशेवर कार्य करने वाले जीवन में, और सैकेन्ड्री स्कूल - परिणाम स्वरुप इन महिलाओं की भी अनुमानित आय कम होती है उन महिलाओं की अपेक्षा जो प्रान्त में कम रहती है/FoRB पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

  स्वास्थ : FoRB पर बढ़ते हुए प्रतिबन्ध देश के स्वास्थ के साथ नकारात्मक सम्बन्ध रखते हैं। शिशुओं की मृत्युदर और बहुत से कम वजन के बच्चे देश में बहुत हैं - FoRB पर उच्च प्रतिबन्ध के साथ उसकी अपेक्षा जो देश में कम/या FoRB पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है - FoRB - १२

- लोकतंत्रीकरण' और नागरिक समाज : धार्मिक स्वतंत्रता का निम्न स्तर लोगों की नागरिक समाज के झुण्ड बनाने की सम्भावनाओं को रोकती है और बदलाव के कलाकार बन जाते हैं, विश्वास गति पर आधारित है जो लोगों को महान सुअवसर उपलब्ध कराता है कि सबसे निम्न स्तर पर और कलाकार बन जाते दोनों लोकतंत्रीकरण प्रक्रियाओं और गरीबी घटाने के लिये।

  अधिकारवादी/सत्तावादी राज्य इस योग्यता से डरते हैं और नागरिक समाज को जकड़ने का प्रयास करते हैं और उनके प्रभाव को धार्मिक स्वतंत्रता को घटाने या सीमित करने के द्वारा। जब सरकारें अपनी जिम्मेवारियां लेती हैं और धार्मिक स्वतंत्रता का आश्वासन देती हैं तो ये सकारात्मक रूप से अपना योगदान लोकतंत्रीकरण - प्रक्रियाओं और मज़बूत नागरिक समाज में दे सकते हैं.१३

- हिंसात्मक झगड़ा और उच्च स्तरीय सेना का लगाया जाना:

  धार्मिक बहुसंख्यावाद और विभिन्न सांस्कृतिकवाद को अक्सर विशेष धमकी के रूप में देखा जाता है और बहुतेरी सरकारें धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास करती हैं जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा बनाये रखी जाये, आदेश और एकता। सांख्यीकीय विशलेषण, ये दिखाता है कि एक देश में ये धर्म की बहुसंख्या नहीं है जो धार्मिक झगड़े और सताव का वर्णन करते हैं, पर बल्की सरकारी और सामाजिक नियम जो धर्म पर है।१४ सरकारी भेदभाव और अशुद्ध ता*, हिंसा का वैध समाज के दूसरे कार्यकताओं द्वारा ठहराया जाता है। ये आगे सामाजिक हिंसा के दबाव को सही करने के प्रयास में सरकारी नियमों की ओर ले जाते हैं और इस प्रकार बढ़ते हुए सताव के लिये द्वार खोलते हैं। इसका अन्त चलते रहते हुए दोषपूर्ण चक्र के नियम वा सताव हैं।१५

- अलौकिक की ओर (सं)ज्ञानात्मक प्रेरणा:

  हाल ही की खोज संज्ञानात्मक विज्ञान ये दिखाता है कि मानव जाति के पास स्वाभाविक प्रेरणा अलौकिक के प्रति है, जैसे ईश्वर में विश्वास या दूसरे गैर-भौतिक चीजें। मानव के पास मानसिक बना हुआ है जो खुशी से अलौकिक दिमाग में दर्शन डालता और अलौकिक ऐजेन्सी बनाता है। फिर भी, ये नोट करना महत्वपूर्ण है कि ये सत्य के विषय कुछ नहीं कहता या धर्म के असत्यता/मिथ्यावाद, बल्कि ये समाविष्ट करती है कि धर्म एक मूल प्रेरणा मानव स्वाभाव में है, और वो धर्म की स्वतंत्रता या विश्वास को गम्भीरता से लेना चाहिये। इस भाव में तब FoRB को प्रतिबंधित करना देखा जा सकता है जो कुछ इसके बराबर है जैसे लोगों को भोजन या शरण के प्रति प्रतिबन्ध करना।१६

- फलस्वरूप, FoRB न केवल व्यक्तिगत मौलिक अधिकार है पर ये राज्य के लोकतांत्रिक और आर्थिक परिस्थिति के लिये भी महत्वपूर्ण है, उनके नागरिकों के कल्याण के लिये, और स्थिरता और शान्ति उसके निवासियों के मध्य। इस स्वतंत्रता की अनदेखी बहुत दूर की पहुंच तक और गम्भीर परिणाम हो सकते हैं, दोनों राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय। इसलिये FoRB हर एक के लिये बहुत महत्वपूर्ण है; वे जो अपने को धार्मिक मानते हैं और वे जो अपने को गैर-ध ार्मिक के समान मानते हैं।

  धर्म की स्वतंत्रता या विश्वास का अनुवाद विशाल रूप से करना चाहिये और ये व्यक्ति विशेष को बचाने के अर्थ में है जो विभिन्न धर्मों का अभ्यास और घोषित करते हैं, जैसे: रीति-रिवाज़, गैर-रीति रिवाज़, और नये धर्म, नास्तिकवाद और अक्षेयवाद। ये अंगीकार ना करने के अधिकार को भी बचाता है। १७. संक्षेप में FoRB हर एक को धर्म होने का अधिकार देता है या विश्वास; कि अपने ध र्म/विश्वास को बदल सकते और प्रगट करने का अधिकार' स्त्री/पुरुष दोनों को समान देता है।

3-FoRB क्या है?

धर्म/विश्वास की स्वतंत्रता का व्यापक रूप से व्याख्या होनी चाहिये और ये व्यक्ति विशेष को बचाने हेत् है वे जो विभिन्न धर्म को घोषित करने और मानते हैं, जैसे: रीति-रिवाज़, गैर रीति-रिवाज़ और नये धर्म, नास्तिकवाद और अक्षेयवाद। ये अंगीकार ना करने के अधिकार का बचाव करता है। १७. संक्षिप्त में, FoRB हर एक को धर्म लेने का अधिकार देता है या विश्वास। अपने धर्म को/विश्वास को बदलने और प्रगट करने का अधिकार देता है उसके/उसकी धर्म/विश्वास जैसा वे चाहते/चाहती है।

3.1 बुनियादी दस्तावेज

FoRB के सम्बन्ध में कुछ अधिक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेज ये हैं:-

- मानव अधिकार की विश्व घोषणा अनुच्छेद १८ में (आई.सी.सी.पी.आर)
- अनुच्छेद १८. अंतर्राष्ट्रीय वाचा नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर (आईसी.सी.पी.आर)
- धर्म/विश्वास के आधार पर सभी असहनशील एवं भेदभाव के स्वरूप के बहिष्करण की १९८१ की घोषणा।
- सामान्य टिप्पणी २२, जहां मानव अधिकार कमेटी ने अनुच्छेद १८ पर विस्तृत किया। (आई.सी.सी.पी.आर)

यहां तक कि यदि कई देशों ने अंतर्राष्ट्रीय सन्धि की बन्धनों की अभिपुष्टि नहीं की हो FoRB का बचाव करता है, इस स्वतंत्रता को माना जाता है कि बचाव किया जाये जो प्रथागत अंतर्राष्ट्रीय नियम का एक भाग है। १८ अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों के अतिरिक्त यहां क्षेत्रीय दस्तावेज FoRB के विषय पर है। ये नोट करना महत्वपूर्ण है कि ये दस्तावेज में FoRB की विभिन्न परिभाषा है और सभी नहीं उपलब्ध कराती FoRB की अच्छी बराबरी का बचाव नहीं देती जैसा आई.सी.सी.पी.आर. देता है।

- अनुच्छेद ९ में यूरोप की कन्वेन्शन की काउंसिल के लिये मानव अधिकारों का बचाव और मौलिक स्वतंत्रताएं (इ.सी.एच.आर)
- पैराग्राफ १६. ओरगेनाइजेशन फॉर सिक्यूरिटी एण्ड कोआपरेशन इन यूरोपस कनक्लूडिंग डोक्यूमेंट इन बीनिया १९८६.
- मानव और लोगों के अधिकारों पर अफ्रीकन यूनियन चार्टर का अनुच्छेद ८।
- अनुच्छेद २६ और २७ में मानव अधिकारों पर अरब चारर्टर
- मानव अधिकारों पर अमेरिकन कन्वेन्शन में अनुच्छेद १२।

3.2 आठ आदर्श के बुनयादी मूल्य

जैसा दूसरे सभी मानव अधिकारों के साथ, व्यक्ति विशेष प्राथमिक थामने वाले हैं और FoRB के लाभान्ति हैं। राज्य के पास जिम्मेवारी है कि नीचे दिये गये कि FoRB के आठ आदर्श-पूर्ण मूल्यों को सम्मान, बचाव और बढ़ावा दें। साथ साथ ये तत्व कम से कम स्तर बनाती है उसे बचाया जाना चाहिये जहां धर्म/विश्वास की स्वतंत्रता का आदर किया जाता है।१९

1 आंतरिक स्वतंत्रता - स्वतंत्रतापूर्वक धर्म/विश्वास को चुनने, बदलने या छोड़ने का अधिकार। ये स्वतंत्रता फोरम-इन्टरनम भी कहलाती है, किसी भी तरीके से या किसी के भी द्वारा कभी भी वैद्यरूप से सीमित नहीं हो सकेगी।

ये मानव अधिकार दस्तावेज के अनुसार बिना शर्त बचाई गई है*। अभी भी एक को धर्म बदलने का अधिकार पर बहस की गई है और चुनौती दी गई है। बहुत सी सरकारें और झुण्ड लोगों को उसका होने, बदलने या विशेष धर्म को छोड़ना निषेध है। बहुत से देशों में लोग जो धर्म का छोड़ना चुनते हैं उन्हें समाज के द्वारा धमकी और हिंसा का सामना करना पड़ता है। एक का धर्म प्रगट करने की आवश्यकताएं - जैसे आई.डी कार्डस पर या दूसरे सरकारी फॉर्म की जरूरत होती है ये अक्सर भेदभाव और सताव के लिये इस्तेमाल किया गया है।२०.

2 बाहरी स्वतंत्रता : धर्म/विश्वास को व्यक्त करने या प्रगट करने की स्वतंत्रता का अधिकार। इस स्वतंत्रता में शामिल है गुप्त या सार्वजनिक रूप से एक का विश्वास को व्यक्त करने या प्रगट करने का अधिकार है, अकेले या समुदाय में दूसरों के साथ।२१. इसमें शामिल हैं दूसरी चीज़ों के साथ का अधिकार: आराधना या धर्म/विश्वास के सम्बन्ध में इक्ट्ठे होना

- और आराधना के भाव को स्थापित करने वा बनाये रखने का अधिकार।
- उदारता या मानवतावादी संस्थाओं को स्थापित करने व बनाये रखने, बनायें, प्राप्त करें और आवश्यक चीज़ों का इस्तेमाल और सम्बंधित सामग्री अनुष्ठान के लिये या धार्मिक/विश्वास के रीति-रिवाज़।
- लिखना, विषय और प्रासंगिक प्रकाशन जो किसी धर्म/विश्वास से सम्बंधित हैं उसे बिखेरना। धर्म/विश्वास की शिक्षा देना उपयुक्त स्थानों में।
- जहां तक स्वैच्छिक आर्थिक सहायता प्राप्त करना या दूसरे दान व्यक्तिगत और संस्था से प्राप्त करना।

- प्रशिक्षित करना, नियुक्ति करना और सही अगुवों व शिक्षकों का चुनाव करना, आवश्यकतानुसार और किसी भी धर्म/विश्वास के स्तर पर।
- संचार व्यवस्था को व्यक्तिगत तथा समुदायों के साथ धार्मिक/विश्वास के मामलों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना व बनाये रखना। विश्राम के दिनों को देखना, छुट्टियों के दिन को आनन्द मनाना और एक के धर्म/या विश्वास के अनुसार उत्सव मनाना, वस्त्र, और एक के धर्म के नुख्से के अनुसार खाना, धार्मिक चिन्हों का इस्तेमाल करना और दूसरों के साथ एक के विश्वास को बांटना।

3 कोई मजबूरी या जबरदस्ती नहीं किसी को अधिकार नहीं कि दूसरे व्यक्ति को विश्वास को बदलने, रखने, या बनाये रखने पर दबाव डाले। दबाव डालने का अर्थ होगा कि किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध धर्म परिवर्तन करने के लिये राजी करना किसी भी प्रकार की शारीरिक हिंसा या धमकी देकर, मनोवैज्ञानिक हिंसा अपराधिक दण्ड या अधिक गैर कानूनी रूप तेज करके। यू.एन. जनरल टीका २२ किस प्रकार धार्मिक स्वतंत्रता की व्याख्या करता है कि यदि एक सरकार उन सामग्री जिससे लाभ होता इस्तेमाल करती या मेडिकल केयर की पहुंच पर प्रतिबन्ध लगाती, शिक्षा और/या रोजगार, लोगों पर धर्म के चुनाव पर असर डालने के लिये, इसे तेज़ दबाव प्रभाव का समझना चाहिये।२२

4 बिना भेदभाव हर कोई FoRB के लिये हकदार है बिना भेदभाव। राज्य आभारी हैं कि सम्मान करें, बचाव व इस स्वतंत्रता को सब व्यक्तियों में अपने देश के भीतर बढ़ावा दें। अधिकांश धर्मों को अल्पसंख्यको के धर्मों पर लाभ नहीं लेना है। किसी भी तरीके से भेदभाव करना मना है धार्मिक क्लेशों के कारण' या व्यक्ति के विश्वास के कारण सरकार को प्रभावशाली कदम उठाना है इस प्रकार के भेदभाव को रोकने के लिये। चाहे वह विधि-विधान, लागू करने' या समाज में हो। २३. राज्य को निष्पक्षता को बनाये रखना चाहिये-धर्म के सम्बन्ध में और धर्म से लगा हुआ। दुर्भाग्यवश भेदभाव जो धर्म/विश्वास के आधार पर है नकारात्मक रूप से अल्पसंख्यकों पर प्रभाव डालता है उनकी मूल सेवाओं की पहुंच पर जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य केयर पूरे संसार में।

5 माता-पिताओं के अधिकार और अभिभावक और बच्चे के अधिकार माता-पिताओं या अभिभावकों को अधिकार है कि वे अपने धर्म या जीवन शैली के अनुसार अपने बच्चे का पालन-पोषण कर सकते हैं। इस बच्चे की क्षमता के अनुसार करना चाहिये। जैसे बच्चा परिपक्व होता है/होती है, उसे अपने विश्वास के सम्बन्ध में अधिक निर्णयों को लेने देना चाहिये। २४. सरकार ये निर्णय नहीं करती कि धार्मिक माता-पिता को क्या बच्चों को देना है। धर्म/विश्वास का अभ्यास कभी भी शारीरिक, मानसिक स्वास्थ या बच्चों के विकास की हानि नहीं करता। हर बच्चे को धार्मिक शिक्षा पाने का अधिकार है - उसके माता-पिता की इच्छा के अनुसार या अभिभावक की ओर कभी भी ऐसी शिक्षा में उनकी इच्छा के विरुद्ध दबाव नहीं डालना चाहिये। यदि धार्मिक शिक्षा जन साधारण-स्कूलों में निष्पक्ष और उद्देश्यी नहीं है, सरकार को विद्यार्थियों के लिये सम्भव बनाना चाहिये कि वैकल्पिक कक्षाओं में जायें। यदि इन अध्यायों में छूट सम्भव है तो इसे बिना भेदभाव के लागू करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय रूप में लाखों अल्पसंख्यक बच्चों को जबरन पक्षपाती शिक्षा में सहभागी कराया जाता और वह बहुसंख्यक के धर्म/विश्वास के पक्ष में।

6 सामूहिक स्वतंत्रता और कानूनी स्थिति: धार्मिक या विश्वास के झुण्डों को अधिकार है कि वे औपचारिक रूप से एक समुदाय के रूप में पहचाने जायें, और वे जो इसे खोजते हैं तो उन्हें कानूनी पहचान की स्थिति दी जानी चाहिये जिससे कि विधिवत देह उनकी रुचि का और समुदायों की तरह अधिकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। औपचारिक पंजीयकरण या कानूनी पहचान स्थिति कभी भी धार्मिक/विश्वास के लिये झुण्डों के आवश्यकता नहीं होना चाहिये कि FoRB का अभ्यास कर सकें या उनके अधिकार अपने ही मामलों में स्वतंत्रता हो। यद्यपि प्राथमिक अधिकार थामने वाले व्यक्तिगत हैं, विद्यमान स्तर FoRB के अधिकार के सम्मिलित पहलू के महत्व को प्रगट करते हैं, सामान्य रूप से बहुत से धार्मिक समुदायों के सदस्यों द्वारा किये गये।२५. दुर्भाग्यवश पंजीकरण के सम्बन्ध में सख्त कानून संसार के कई स्थानों में इस्तेमाल किये जाते हैं, समुदायों के धार्मिक विश्वासियों में भेदभाव करने, उत्पीड़न करने और सताने के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं।

7 गैर-अनादरकारिता': विशेष परिस्थिति में, जैसे: युद्ध या आपातकालीन स्थिति, एक सरकार कुछ हद तक कुछ मानव अधिकार पर आपत्ति करें। आई.सी.सी.पी.आर. अनुच्छेद ४ में इन आपत्तियों का बयान करता है जो ''अप्रतिष्ठा'' कहलाता है, केवल उस तरह से बनाया जा सकता है कि वे दूसरे अंतर्राष्ट्रीय दायित्व और कानून का खण्डन नहीं करते, और माप को किसी भी तरीके से भेदभाव में नहीं शामिल किया जा सकता जो धर्म, भाषा, लिंग, जाति, रंग, या सामाजिक मूल के आधार पर है। जिस पर भी कुछ अधिकार है जो किसी भी परिस्थिति में अनदेखा या इंकार नहीं किया जा सकता जैसे गैर अनादर योग्य अधिकार: FoRB की आंतरिक स्वतंत्रता उनमें से एक है। पाने का अधिकार, अपनाने, बदलने और धर्म या विश्वास को बनाये रखने, किसी को भी कभी मना नहीं किया जा सकता।

बिना जबरदस्ती, बिना भेद-भाव और माता-पिता के अधिकार भी गैर-अनादरयोग्य हैं। दूसरे मानव अधिकार जो बिना अनादरयोग्य हैं वो जीवन के अधिकार हैं, उत्पीड़न और दासत्वता से स्वतंत्रता और कुछ विशेष अधिकार जो कानून और अपराधिक प्रक्रियाओं से सम्बंधित हैं।२६.

C विशेष अपवाद देशों के सम्बन्ध में जहां मृत्यु दण्ड की प्रथा आज भी अस्तित्व में है।

8 वैध सीमाएं - बहुत से मानव अधिकारों की तरह विशेष समय हो सकता है जब FoRB वैध रूप से सीमित किया जा सकता है। ये सीमाएं/प्रतिबन्ध धर्म के प्रगट करने के अधिकार पर लागू किया जा सकता है। प्रतिबन्ध कभी भी भेद-भाव के तरीके से नहीं लागू किया जाना चाहिये। कोई भी सीमा बद्धता या प्रतिबन्ध को ये सब तीन आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिये:

- जो कानून पर आधारित हो।
- आवश्यक और संतुलित, जो है, यदि राज्य लक्ष्य की प्राप्ति दूसरे तरीके से करता है तो उन्हें समाधान चुनना है जो FoRB को सीमित नहीं करता।
- नीचे दिये गये जनता के माल को बचाने के लिये अपनाया गया:-
  - जनता की सुरक्षा
  - जनता की व्यवस्था
  - जनता का स्वास्थ्य
  - जनता का आचरण (जो जनता का आचरण है उसके दावे को एक से अधिक धार्मिक रीति-रिवाज़ पर आधारित होना चाहिये)
  - मूल मानव अधिकार और दूसरों की स्वतंत्रता २७.

ईरान में मसीहियों का सताव

ईरान में एक मसीही पास्टर ''यूसेफ नादरखानी'' ने तीन वर्ष जेल में काटे, और एक मृत्युदण्ड उसके सिर पर लटक रहा था, केवल उसके विश्वास के कारण। नादरखानी को २००९ में कैद किया गया था। मुस्लिम धार्मिक आदेश पर प्रश्न पूछे जाने के बाद उसके दो पुत्रों को स्कूल में जाना था। स्वधर्मत्याग का आरोप लगाया गया था, वह इस्लाम को छोड़ना है। यूसेफ का जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था, पर वह इससे पहले कि मसीही बन गया - वह मानने वाला मुस्लिम नहीं था। २०१० में नादरखानी की मौत की सजा इस्लाम छोड़ने पर दी गई - मसीहत में धर्मपरिवर्तन के लिये। नादरखानी ने मृत्यु-दण्ड के विषय अपील की। फिर भी दोनों स्थानीय अदालत और सुप्रीम कोर्ट ने इसे कायम रखा। अदालत की कई सुनवाइयों के दौरान नादरखानी को स्वतंत्रता का प्रस्ताव व सभी आरोपों को हटा देने का प्रस्ताव दिया गया यदि वह मसीही विश्वास को छोड़कर वापस इस्लाम धर्म को स्वीकार कर ले। नादरखानी ने इसे इंकार कर दिया। सितम्बर २०१२ में नई अदालत की सुनवाई के दौरान नादरखानी को धर्म तिरस्कार के अपराध से मुक्त किया गया और मृत्यु-दण्ड उठा लिया गया। इसके बदले उसे मुस्लिमों के बीच सुसमाचार प्रचार करने का दोष लगाया गया और तीन वर्ष का कारावास दिया गया। इसलिये कि वह पहले ही तीन वर्ष जेल में काट चुका था। उसे छोड़ दिया गया।

साधन : क्रिश्चियन सोलीडेरिटी वर्ल्डवाइड, 2012

4 FoRB को किस प्रकार अपशब्द कहे गये?

राज्य की प्राथमिक जिम्मेवारी है कि मानव अधिकारों को अपनी सीमा के अन्दर सम्मान दें, बचाव करें और बढ़ावा दें। राज्य इसे करने को बाध्य है:-

- मानव अधिकारों का आदर करें-ये है कि मानव अधिकार की निन्दा ना हो।
- मानव अधिकारों की सुरक्षा/बचाव करें - ये हैं, ये आश्वस्त करने के लिये क्रियाशील भूमिका निभाये कि ना तो राज्य ना कोई भी दूसरा उनकी सीमा के अन्दर उसके निवासियों के अधिकारों का अनादर ना करें।
- मानव अधिकारों को बढ़ावा दे - वो ये है, क्रियाशील भूमिका सिखाने में और प्रोत्साहित सम्मान करने में और सीमा के अन्दर मानव अधिकारों की सुरक्षा करें।

अक्सर, यद्यपि, ये स्वयं राज्य है जो मानव अधिकारों के उल्लंघनों का कर्ता है, और ये इसलिये अति आवश्यक है मानव अधिकारों के अस्तित्व को बने रहने के लिये स्वयं लोगों को अपने मानव अधिकार जानना है। ''इलोनर रूज़वेल्ट'' जो अगुवा उस कमीशन का था जो मानव अधिकारों की घोषणा में ड्राफ्ट बनाने का जिम्मेवार था, मानव अधिकारों के दस्तावेज पर जनता की जानकारी के महत्व पर जोर देना था और कहा कि उनका ''कोई वज़न नहीं है जब तक कि लोग उन्हें जानें, जब तक कि लोग उन्हें समझें, जब तक कि लोग ये मांग न करें कि वे जीते हैं।''२८.

4.1 केन्डेलिन के सताव के तीन पहलू हैं

अन्तर्राष्ट्रीय कोई गणना नहीं है कि कैसे सताव का वर्णन व माप करें। गिनतियां और सांख्यिकी सताये गये विश्वासियों पर गड़बड़ी पैदा कर सकती है। फिर भी, सताव का एक दृष्टिकोण ये है जो लगातार है, नाम से हिंसा या हिंसा की धमकी। इसके क्रियाविधि जो हिंसा की ओर बढ़ती शामिल है उसका वर्णन करने का एक तरीका है जोहान केन्डेलिन की डी तीन पहलू के नमूना। नमूना पहलूओं को क्रियात्मक

और निष्क्रिय दशा में विभाजित करता है। पहलू क्रियाशील है यदि राज्य सीधे तौर से शामिल है और निष्क्रिय है, यदि सताव साधारण लोगों द्वारा किया गया है/या नागरिक समाज द्वारा और राज्य सताव को रोकने के लिये रोकने में और पीड़ितों को बचाने में असफल हैं। तीन दशा पर पहलू एक ही समय में कुछ हद तक ढ़क लेते हैं।

- गलत सूचना : रहती और रुढ़िबद्ध प्रतिरूप इनमें जैसे-मीडिया, शिक्षण सामग्री और मार्ग में राजनीतिज्ञ और अफसर धार्मिक अल्पसंख्या का वर्णन करते हैं। अपवाह, द्वेष/पक्षपात, शत्रुता जनसंख्या के बीच जो भेदभाव के कार्य को सही ठहराता है।
- भेदभाव : विधि-विधान, कानूनी प्रबन्ध व्यवस्था और सार्वजनिक सेवाएं, रोजगार, शिक्षा और परिवारिक मामलों के सम्बन्ध में।
- हिंसात्मक सताव : हिंसा की धमकी या व्यक्ति के विरुद्ध हिंसा या व्यक्ति की चीजें जो उसके धार्मिक सम्बन्धों की है जैसे : कारावास, उत्पीड़न, शारीरिक मुसीबत, विस्थापन, और हिंसात्मक हमले।२९.

4.2 तर्क विरुद्ध FoRB पर प्रतिबन्ध

चाहे कुछ धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन है, जैसे दूसरे मानव अधिकार से अलग सुस्पष्ट है, ये निर्भर करता है कि क्या ये नहीं है। एक पूछ सकता है, क्या कोई जो विभिन्न धर्म/विश्वास का है या किसी भी धर्म/विश्वास का नहीं है उसी परिस्थिति में वही व्यवहार भोगता है, क्या दूसरे धर्म के लोगों के साथ विभिन्न व्यवहार किया जाता है, भले ही उल्लंघन का उद्देश्य धार्मिक ना हो, वह तभी भी धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा इसलिये कि उसका परिणाम भी एक मुख्य विषय है। ३०.

कुछ प्रतिबन्ध सरकार के कार्यों से हैं, नीतियां और कानून। दूसरे परिणाम शत्रुपूर्ण कार्य गुप्त व्यक्तिगत लोग, संस्थाएं और सामाजिक झुण्डों द्वारा २०१२ की धर्म एवं सार्वजनिक जीवन पर प्रिय फोरम की रिपोर्ट के अनुसार, सबसे उच्च स्तर के प्रतिबन्ध ऐसे देशों में पाये जाते हैं जैसे पाकिस्तान, भारत, मिस्र, और रूस जहां दोनों सरकारों के प्रतिबन्ध हैं।

CASE

भारत में मुस्लिमों पर सताव

लगभग २००० मुस्लिम मारे गये मुस्लिम विरोधी हमले में जो हिन्दू कट्टरपंथियों द्वारा गुजरात (भारत) में फरवरी/मार्च २००२ में किया गया था। क्रूरतापूर्ण हिंसा बिना रुके तीन दिन तक चलती रही और अनियमित रुप से कई सप्ताहों तक जारी रही। इस क्रोध में भीड़ ने हमला किया, लूटा और कई मुस्लिम घरों वा इबादतगाहों को जला दिया। हजारों बेघर हो गये। दस हजारों को भीड़ के क्रोध से भागना पड़ा। ये हिंसा लगता है सोची-समझी योजनाबद्ध ट्रेन में आग लगा देने का परिणाम थी, जो कहा जाता मुस्लिमों द्वारा लगा दी गई थी। फिर भी ये स्पष्ट नहीं हो सका था। स्थानीय प्रयास कि मुस्लिमों के विरुद्ध रोकी जाये ये पक्षपाती अगुवों के कारण रुकावटें डाली गईं जो हिन्दू कट्टरपंथियों की सहायता करते थे। बहुत से गवाह ये दावा करते हैं कि बहुत से पुलिस अफसरों ने लोगों को सुरक्षा प्रदान करने के बजाय लोगों को हिंसात्मक भीड़ की ओर ढकेला। विश्वसनीय आरोप गुजरात के मुख्यमंत्री पर लगाये गये, उन पर दोष लगाया गया कि उन्होंने आदेश पुलिस को दिया कि हिन्दुओं द्वारा मुस्लिमों के हमले में रुकावट ना डालें।

साधन : क्रिश्चियन सोलीडेरिटी वर्ल्डवाइड।

D डी.जोहान कैन्डलिन वर्ल्ड इवेन्जलीकल एलायन्स के पूर्व प्रेसीडेन्ट है

और समाज एक विशाल रूप में धार्मिक विश्वास और मानने पर बहुत से सीमाएं थोपती है। पर सरकारी नीतियां और सामाजिक शत्रुता आगे-पीछे नहीं चलतीं। चीन, एरीट्रिया आगे उज़बेकिस्तान के धर्म पर बहुत ऊंचे सरकारी प्रतिबन्ध हैं। पर वे मध्यम या निम्न स्तर के हैं जब ये सामाजिक शत्रुता की बात पर आते हैं। विपरीत नमूना, सामाजिक शत्रुता में बहुत ऊंचा और सरकारी प्रतिबन्धों में मध्यम और निम्न है ये कम सामान्य/आम है।३१ देश जिसमें सामाजिक शत्रुता बहुत ऊंचाई पर है अक्सर सरकारी प्रतिबंध भी ऊंचे नम्बर पर हैं।

Restrictions on Religion Among the 25 Most Populous Countries

Among the world's 25 most populous countries, Egypt, Indonesia, Russia and Pakistan stand out as having the most restrictions on religion when both government restrictions and social hostilities are taken into account. (Countries in the upper right of the chart have the most restrictions and hostilities.) Brazil, the Philippines, Japan, the United States and Mexico have the least restrictions and hostilities. (Countries in the lower left have the least restrictions and hostilities.) Scores are for calendar year 2011.

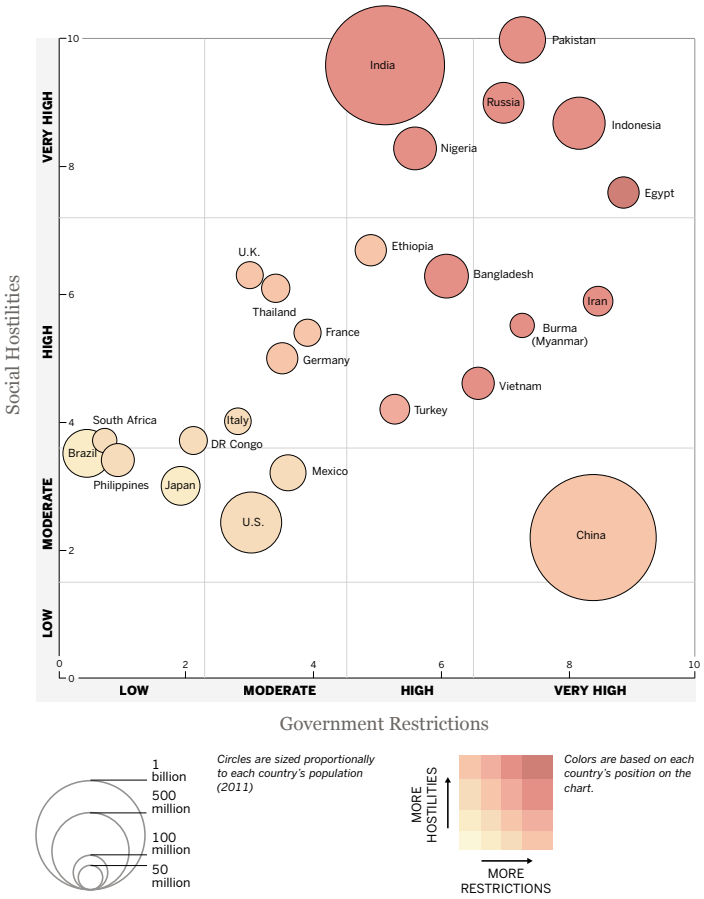

Arab Spring Adds to Global Restrictions on Religion, June 2013 • PEW RESEARCH CENTER

ये ग्राफ सामाजिक और सरकारी शत्रुता के स्तर को प्रगट करता है (y-axis) संसार के सबसे अधिक जनसंख्या वाले देशों के प्रतिबन्ध। जैसा आप देशों को देख सकते हो जो ग्राफ के ऊपर दाहिने कोने पर बसे हुए हैं, ग्राफ वो है। जिसमें FoRB पर सबसे अधिक प्रतिबन्ध हैं।

4.3 सरकार के प्रतिबन्ध

ये प्रतिबन्ध भेदभाव के कानूनों की श्रेणी से जैसे नियंत्रण - व्यवस्था, ईश-निन्दा* के कानून और धर्मपरिवर्तन पर रोक और धर्मान्तरण*, धमकी, मोनीटर करना, छापे, निरंकुछ रोका रखना और बिना कानूनी प्रक्रिया के कारावास*। अक्सर सरकार भारी बोझिल रजिस्ट्रेशन की आवश्यकताएं रखती - विश्वास को सामुदायिक आधार पर स्वतंत्रता के इंकार के तौर पर इस्तेमाल करती है - उन्हें कानूनी पहचान होने में बाधा डालती है और उनकी सम्भावनाओं को सीमित करती है। जैसे : स्टॉफ नियुक्ति, किराया या आराधना की जगह खरीदने में। कुछ धार्मिक झुण्ड महान कठिनाइयों का अनुभव करते हैं रजिस्ट्रेशन पाने में और इस प्रकार उनकी गतिविधियों अधिकारियों द्वारा गैर कानूनी और दण्डनीय मानी जाती हैं। हाल के वर्षों में आतंक के विरुद्ध लड़ाई अधिक इस्तेमाल की गई हैं-मानव अधिकारों के उल्लंघन के प्रति न्याय के लिये इस्तेमाल धार्मिक स्वतंत्रता के क्षेत्रों में। धार्मिक अल्पसंख्यक भी कानूनी की चीज़ों में लागू करने में भेदभाव का सामना कर सकते हैं सार्वजनिक सेवाओं तथा शिक्षा के सिस्टम और रोज़गार में भी।

4.4 सामाजिक शत्रुता

गैर-सरकारी कलाकार भी धार्मिक स्वतंत्रता में प्रतिबन्ध लगा सकते हैं; धमकी के रूप में, सामाजिक हिंसा और अराधना के स्थलों पर, सम्पत्ति या विशेष धार्मिक ग्रुप के व्यक्तियों पर। बहुत से उदाहरण हैं जहां इस प्रकार के आक्रमण और उल्लंघन बिना दण्ड के चले जाते हैं क्योंकि अधिकारियों की इच्छा की कमी हैं, साहस या कमजोर व्यक्तियों व झुण्ड को बचाने की योग्यता और उल्लंघन करने वालों पर मुकद्दमा चलाया जाये। अशुद्धता आगामी सामाजिक शत्रुता को प्रोत्साहित करती है।

1 पृष्ठ 4

धार्मिक या विश्वास की स्वतंत्रता

हर एक की रूचि में। संसार के अधिकतर लोगों के लिये धर्म महत्वपूर्ण है FoRB को अक्सर प्रतिबंधित किया है।

धार्मिक सताव विभिन्न रूप से आते हैं और ये दोनों मनोवेज्ञानिक और शारीरिक हो सकते हैं। ये ब्रोशर आपको वर्णन करेगा कि क्यों धार्मिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, धार्मिक स्वतंत्रता क्या है और धार्मिक स्वतंत्रता को किस प्रकार निन्दित किया जाता है।

2 पृष्ठ 5

सामान्य गलतफहमियां

बहुत सी गलतफहमियां हैं कि FoRB क्या है। हम कुछ अत्याधिक गलतफहमियों को हटाना चाहते हैं। FoRB को ये नहीं करना है :-

- धर्मों को आलोचना या उपहास से बचाना। ये लोग हैं जो विभिन्न धर्मों में विश्वास करते उनसे बचाने की आवश्यकता है।
- हर एक को उसी पर विश्वास करना।
- केवल पश्चिमी या मसीही रूचि को बढ़ावा देना।
- धर्म निरपेक्ष बनायें, जो गैर धार्मिक समाज है।

3 पृष्ठ 6

क्यों FoRB महत्वपूर्ण है?

FoRB सभी धार्मिक/विश्वास के झुण्ड़ों पर प्रभाव डालता है, जिसमें वे भी शामिल हैं जो किसी ईश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं (नास्तिक)। समस्त संसार में FoRB के ऊपर तर्क/गलत प्रतिबन्ध होते हैं। FoRB के उल्लंघन दूसरे मानव अधिकारों के उल्लंघन से जुड़े हुए हैं। ध ार्मिक स्वतंत्रता अपने आप में महत्वपूर्ण है क्योंकि ये लोगों को एक पहचान होने का अधिकार देती है और बनाने का और अपना व्यक्तिगत विश्वास दिखाते हैं। इसके साथ ही धार्मिक स्वतंत्रता मानव अधिकार को बढ़ावा देती है। ऐसा लगता है कि उच्च प्रतिबन्ध FoRB पर समाज के बीच सम्बंध :

- खराब आर्थिक विकास, निम्न स्तर और समाज में महिलाओं की सहभागिता और आर्थिक मामलों और खराब स्वास्थ रिकार्ड़ों के बीच है।
- कमजोर सार्वजनिक समाज और निम्न स्तर की हलचल
- हिंसात्मक झगड़ों को उच्च स्तर और सेना का इस्तेमाल

4 पृष्ठ 9

FoRB क्या है?

FoRB का मतलब है कि हर एक को अधिकार है:-

- धर्म/विश्वास रखने का
- अपने धर्म को बदलने का (उसका/उसकी)
- अपने धर्म को प्रगट करने का (पुरुष/महिला दोनों को)

इन अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों पर सहमति है, जैसे अनुच्छेद १८ की विश्वव्यापी मानव अधिकार की घोषणा और नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा।

5

पृष्ठ 10

आठ आदर्शीय पूर्ण मूल्य

आठ आदर्शीय पूर्ण मूल्य हैं जो FoRB के कम से कम स्तर को बनाते हैं:

1. आंतरिक स्वतंत्रता : हर एक को अपने बारे में निर्णय करने का अधिकार है कि क्या विश्वास करें या न करें, जिसमें बदलना या अपने विश्वास को तिरस्कार करना शामिल है।
2. बाहरी स्वतंत्रता : हर एक को अपने धर्म को बचाने का गुप्त में और सार्वजनिक रूप से अधिकार है।
3. कोई मजबूरी या जबरदस्ती नहीं : किसी को भी किसी को जबरन दबाव डालने का अधिकार नहीं है, मानना या विश्वास बदलने के लिये।
4. बिना-भेदभाव के : किसी भी तरह का भेद-भाव धर्म/विश्वास के कारण करना मना है।
5. माता-पिता और अभिभावकों का अधिकार : माता-पिता/ अभिभावकों को अधिकार है कि वे बच्चे का पालन-पोषण अपने धर्म में कर सकते हैं।
6. सामूहिक/सम्मिलित स्वतंत्रता और कानूनी स्थान : धार्मिक झुण्ड़ों को अधिकार है कि वे एक समुदाय/संस्था की तरह रजिस्टर कर सकते हैं और कानूनी अधिकार प्राप्त कर सकते हैं और जिम्मेवारियां, जिससे ठेका/इकरारनामें पर हस्ताक्षर कर सकते और ऋण अदा कर सकते हैं।
7. गैर-अनादरपूर्णता : FoRB की आंतरिक स्वतंत्रता (रखने का, अपनाने और अपने धर्म को बदलने का अधिकार) ये कभी भी कानून सीमित नहीं हो सकता।
8. न्याय संगत सीमाएं : एक के विश्वास को व्यक्त करना/ सुस्पष्ट करने का अधिकार विशेष परिस्थिति में सीमित किया जा सकता है।

गलत सूचना
↓
भेदभाव
↓
हिंसात्मक सताव

6

पृष्ठ 14

केन्डलिन के सताव के तीन पहलू:

सताव अक्सर भेद-भाव के साथ आरम्भ होता है (झूठ और अपवाह) धार्मिक झुण्ड के विषय/ गलत सूचना भेदभाव में परिवर्तित हो जाती है उदाहरण के रूप में विधि-निर्माण/कानून, शिक्षा या रोजगार। कभी कभी सताव भी हिंसात्मक हो जाता है जिसमें तत्व शामिल हैं - जैसे हिंसात्मक हमला, कारावास, प्रताड़ित करना आदि।

7

पृष्ठ 15

गलत सीमाएं

राज्य की जिम्मेवारी है कि मानव अधिकारों का आदर-सम्मान, सुरक्षा और बढ़ावा देना। इस जिम्मेवारी के बावजूद ये अक्सर राज्य हैं जो मानव अधिकारों का उल्लंघन करता है। इसलिये ये महत्वपूर्ण है कि लोगों को अपने मानव-अधिकारों को जानना चाहिये।

FoRB का उल्लंघन विभिन्न तरीकों से होता है। वे सरकार के प्रतिबन्धों से आ सकते हैं, जैसे अनुचित कानून और नियम, धमकाया जाना, कार्य को चलाना, छापे, और बिना सही कानूनी प्रक्रियाओं के कारावास, FoRB के उल्लंघन सामाजिक शत्रुता के कारण हो सकते हैं, ये है, गैर सरकारी कार्यकताओं/कलाकारों से प्रतिबन्ध जैसे पड़ोसियों और समुदायों में। ये उल्लंघन में उत्पीड़न, ध मकी, सामाजिक हिंसा और धार्मिक-प्रार्थना स्थलों पर आक्रमण या व्यक्ति विशेष किसी विशेष धार्मिक झुण्ड़ों पर। ये उल्लंघन बिना सजा के जाते हैं क्योंकि राज्य इनके विरुद्ध कुछ कार्यवाही करने में असफल है।

‘‘इलेनर रूज़वेल्ट’’ कहा करते थे
कि मानव अधिकार के दस्तावेज़ों का
‘‘कोई वज़न नहीं है जब तक कि लोग
इन्हें ना जानते हैं, जब तक कि लोग
इन्हें ना समझें, जब तक कि लोग ये
मांग ना करें कि वे जीवित रहें।’’

कैसे ये शॉर्टकट इस्तेमाल करें

ये छोटा रास्ता लेख का संक्षिप्त अनुवाद उपलब्ध करता है जिससे भाषा को आसानी से समझा जाये। छोटा रास्ता अकेले इस्तेमाल किया जाये या पुस्तक को संयोग के साथ पढ़ने में। आसानी से इस्तेमाल करने के लिये ये फोल्डर बनाया गया है जिससे आसानी से फाड़ा जा सके। साधारण रूप से निशान लगायें हुए जगह से फाड़ सकते हैं।

धर्म विश्वास की स्वतंत्रता हर एक के लिये छोटा रास्ता।

हर एक के लिए

धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता

(FoRB)

शॉर्टकट

stefanus alliance international

together for the persecuted

ALL INDIA CHRISTIAN COUNCIL

aicc

TO PROTECT AND SERVE

अन्त के नोट्स

1 Grim B. J., 2008. God's Economy. In: Marshall, P. (ed.), 2008. Religious Freedom in the World.

2 Forum 18, 2012. Tajikistan: Mosque raided, worshippers detained without trial. http://www.forum18.org/Archive.php?article_id=1662

3 Asia News, 2011. Karnataka: Hindu extremists attack two Protestant churches on Good Friday. http://www.asianews.it/news-en/Karnataka:-Hindu-extremists-attack-two-Protestant-churches-on-Good-Friday-21394.html

4 CNN, 2010. Death toll rises to 98 after Lahore attacks. http://articles.cnn.com/2010-05-28/world/pakistan.violence_1_shiite-muslims-ahmadi-mosques?_s=PM:WORLD

5 International Covenant on Civil and Political Rights, article 20

6 Lindholm, T., 2004. Philosophical and Religious Justification for Freedom of Religion or Belief. In: Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G., (eds), 2004. Facilitating Freedom of Religion or Belief: A Deskbook.

7 Glendon, M. A., 2002. A World Made New.

8 Novak/Vospernik, 2004. Permissible Restrictions on Freedom of Religion or Belief. In: Lindholm, T. W., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G., (eds), 2004. Facilitating Freedom of Religion or Belief: A Deskbook. P. 147.

9 Marshall, P., 2008. The Range of Religious Freedom. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World.

10 Pew Research Center's Forum on Religion & Public Life, 2013. Arab Spring Adds to Global Restrictions on Religion

11 Cash, K., 2009. Faith, Freedom and Change, Swedish Mission Council. http://www.missioncouncil.se/ ; Marshall, P., 2008. The range of Religious Freedom. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World.

12 Grim, B. J., 2008. God's Economy. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World

13 Malloch, T., 2008. Free to choose: Economics and Religion. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World

14 Grim, B. J., 2008. God's Economy. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World

15 Grim, B. J., Finke, R., 2011. The Price of Freedom Denied

16 Trigg, Robert, 2012. Equality, Freedom, & Religion.

17 United Nations Human Rights Committee, General Comment No. 22 (2)

18 Ghanea, N., Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G, 2004. Introduction. In: Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G (eds), 2004. Facilitating Freedom of Religion or Belief: A Deskbook

19 Ghanea, N., Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G, 2004. Introduction. In: Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G (eds), 2004. Facilitating Freedom of Religion or Belief: A Deskbook

20 UDHR, art. 18; ICCPR art 18 (1); ECHR, art 9 (1), General Comment 22 (3, 5)

21 ICCPR, art. 18; General Comment 22 (4); 1981 Declaration art. 6

22 ICCPR, art. 18 (2); General Comment 22 (5); 1981 Declaration, art. 1 (2)

23 UDHR, art 2; ICCPR, art 2, 5, 26 and 27; 1981 Declaration art. 2-4; General Comment 22, art. 2; ECHR, art 14

24 CRC, art 14 (2); ICCPR 18(4); General Comment, art 6; 1981 Declaration, art 5

25 Ghanea, N., Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G, 2004. Introduction. In: Lindholm, T., Durham, C., Tahzib-Lie, B. G (eds), 2004. Facilitating Freedom of Religion or Belief: A Deskbook; ICCPR 18(1)

26 ICCPR, art. 4(2); General Comment 22, art. 3 and 8

27 ICCPR, art. 18(3); ECHR, art. 9(2); General Comment 22, art. 3, 8

28 Glendon, M. A., 2001. A World Made New. P. xix

29 Candelin, J., 2005. World Evangelical Alliance: Geneva Report 2005. A perspective on global religious freedom: challenges facing Christian Communities.

30 Marshall, P., 2008. The nature of religious freedom. In: Marshall, P. (ed), 2008. Religious Freedom in the World

31 Pew Research Center's Forum on Religion & Public Life, 2013. Arab Spring Adds to Global Restrictions on Religion

शब्दावली

सम्बन्ध - एक सम्बन्ध व्यक्तियों, झुण्डों या संस्थाओं के बीच।

अज्ञेयवादी - कोई जो ये विश्वास करता है कि ये जानना असम्भव है चाहे कोई ईश्वर है या नहीं।

मध्यस्तता - जब नियम बदलते हैं या बेतरतीब लागू किया जाता है।

नास्तिक - वह जो किसी ईश्वर पर विश्वास नहीं करता।

अधिकारवादी - तानाशाह; अलोकतंत्रीय

स्व-शासन - स्वयं शासन करने वाला

लाभांति - लोग जो कुछ पलों का आनन्द उठाते हैं।

निन्दा - अनादरपूर्ण या अभद्रशब्द या ईश्वर के विषय कार्य या पवित्र वस्तुएं।

सेंसर-व्यवस्था - हिस्से में रुकावट डालना या पूरे लेख में (या दूसरे प्रकार के संवाद में) जो जनता के सन्मुख पेश किया जाता है।

लोकतंत्रीकरण - लोकतंत्र की ओर प्रक्रिया या बढ़ते हुए लोकतंत्रिक यंत्र रचना का इस्तेमाल।

यथोचित कानूनी प्रक्रियाएं - माप-जो व्यक्तिगत लोगों को अदालत के सिस्टम में सम्बन्धों में सुरक्षित करते हैं।

FoRB - धर्म/विश्वास की स्वतंत्रता

फोरम इन्टरनम - व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तिगत मामला

उत्पीड़न - व्यवहार जो नाराज़ करता या किसी को परेशान करता।

एकरूपता - जब एक झुण्ड के सदस्यों का एक सा व्यापार, रीति-रिवाज़, ध ार्मिक विश्वास हो आदि।

निष्पक्षता - पक्षपात रहित हो

दण्डाभाव - अपराधिक कार्यों की सजा/दण्ड की कमी

वैद्यीकरण - किसी चीज़ को अधिक कानूनी बनाना या ठीक करना

व्यक्त करता/प्रगट करना - अभ्यास करना या भाग लेना

बिना सद्भावनापूर्ण - कुछ जो संगति से बाहर; जो सही नहीं चलता

बिना अनादर - अपवाद/आपत्ति बनाने की अनुमति नहीं

सताव - हिंसा या हिंसा की धमकी व्यक्ति के विरुद्ध या उसके परिवार या संम्पत्ति के विरुद्ध।

धर्मांतरण - किसी को अपने धर्म या जीवन शैली के समुदाय में मिलाने का प्रयत्न करना।

धर्मनिरपेक्षतावाद - एक विचार जो जनता के मामले में विरोध करता है और धर्म को व्यक्तिगत रूप से चलाये जाने का समर्थन करता है।

धर्मनिरपेक्षता - प्रक्रिया जो धार्मिक मामलों को सरकार के मामलों से अलग करती है।

सामाजिक आर्थिक - सामाजिक और आर्थिक मामले

बिना शर्त के - कोई शर्त नहीं जोड़ी गई

सम्मेलन/सभा और घोषणाओं के संक्षिप्त रूप

आई.सी.सी.पी.आर. - नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा

यू.डी.एच.आर. - मानव अधिकारों का विश्वव्यापी घोषणा।

समाप्ति की टिप्पणियां

संसार के करोड़ों लोगों के लिये, धर्म एक बहुत महत्वपूर्ण कारक उनके जीवनों के लिये है। ये अभिप्राय का बोध कराता है, जीवन के बड़े प्रश्नों को बताने में सहायता करता है और बहुत से संलग्न करता है इस से कि अपना है और संगति। उसी तरीके से बहुत से हैं जिन्हें धर्म की आवश्यकता नहीं है और अर्थ पाते हैं और बिना इसके अभिप्राय का भाव। इन सब लोगों के लिये फोर्बे महत्वपूर्ण है, विश्वासियों और अविश्वासियों के लिये एक समान। हम आशा करते हैं कि इस पुस्तिका ने आपको महान समझ फोर्बे के सूचि को उपलब्ध कराया है साथ ही बचाव करने के और इस मौलिक अधिकारों को बढ़ावा देने का महत्व है।

स्टेफनस एलाइन्स अन्तर्राष्ट्रीय के विषय

स्टेफनस एलाएन्स इन्टरनेशनल एक मसीही मिशन और मानव अधिकारों की संस्था है जो नोर्वे में स्थापित है, एक विशेष ध्यान धार्मिक/विश्वास की स्वतंत्रता पर। स्तेफनस अलायन्स इन्टरनेशनल लोगों के अधिकारों के लिये संघर्ष करता है कि वे धर्म/विश्वास को रखें, बदल सकें और व्यक्त/प्रगट कर सकें। हमारे उद्देश्य के साथ ''एक साथ सताये हुओं के लिय'' हम सहारा उपलब्ध कराते हैं, केयर (देख-भाल) और व्यवहारिक सहायता उन लोगों व कलीसियों को समस्त संसार में जो सताये जाते हैं या अपने विश्वास के कारण शोषित किये जाते हैं।

ये पुस्तिका और FoRB के विषय अधिक जानकारी स्टेफनुस एलायन्स इन्टरनेशनल की

वेब पेज : www.stefanus.no पर download कर प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आपके पास FoRB के विषय कुछ प्रश्न हैं, तो आपका स्वागत है कि हमें इस पते पर सम्पर्क करें:
post@stefanus.no or + 47 23 40 88 00

ऑल इंडिया क्रिश्चियन काउंसिल (AICC)

ऑल इंडिया क्रिश्चियन काउंसिल 1998 में अस्तित्व में आई, कि मसीही समाज, अल्पसंख्यक और दीन जाति की सेवा व रक्षा करें। AICC हजारों भारतीय संप्रदायों, संस्थाओं और अगुवों का गठबंधन है।

All India Christian Council
Logos Bhavan, Medchal Road, Jeedimetla village
Secunderabad – 500 067
Tel: 040-2786-8907 / - 8908; Fax: 040-2786-8908
Email: administrator@christiancouncil.in
Website: www.christiancouncil.in

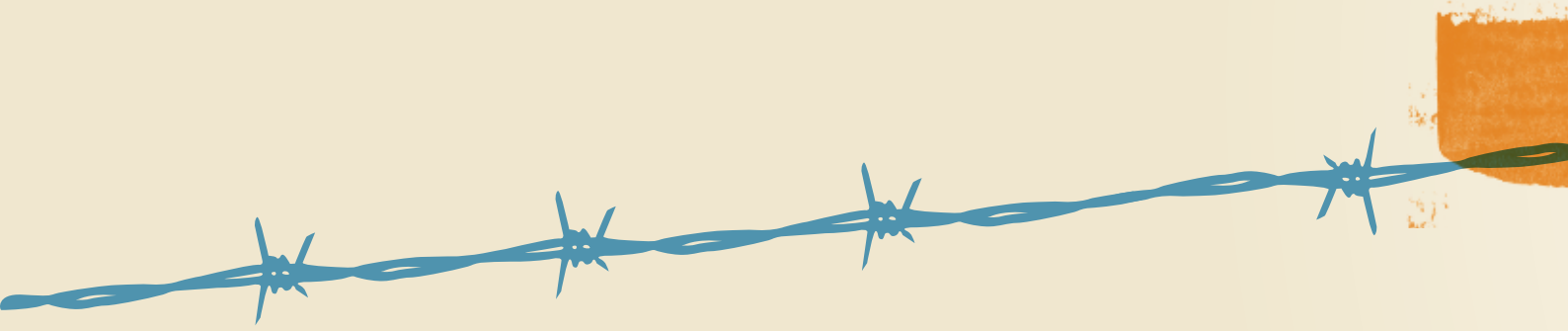

ALL INDIA CHRISTIAN COUNCIL
aicc
TO PROTECT AND SERVE

stefanus alliance international
together for the persecuted
www.stefanus.no

Digni